महामहिम राज्यपाल, बिहार,
श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन
(ज्ञान निकेतन, बिट्ठल बिहार कॉम्पलेक्स, गोला रोड, पटना
दिनांक–12.10.2015, 11.00 बजे पूर्वाहन)

बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद् के अध्यक्ष आचार्य किशोर कुणाल जी, एम0वी0वी0 न्यास के अध्यक्ष, भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत अधिकारी श्री जियालाल आर्य जी, पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ0 एस0 एन0 पी0 सिन्हा जी, सी0बी0एस0ई0 के क्षेत्रीय पदाधिकारी श्री आर0 आर0 मीणा जी, ज्ञान निकेतन विद्यालय की प्रशासक श्रीमती अनिता कुणाल जी, विद्यालय के प्राचार्य श्री शुभोदीप डे जी, ज्ञान निकेतन एवं टूर्नामेंट में शामिल अन्य सभी विद्यालयों के विद्यार्थीगण, 'सी0बी0एस0ई0 कलस्टर–प्ट वॉलीबॉल टूर्नामेंट– 2015' के प्रतिभागी खिलाड़ीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, बहनों एवं भाइयों।

'सी0बी0एस0ई0 क्लस्टर–प्ट टूर्नामेंट–2015' के उद्घाटन के लिए आपने मुझे आमंत्रित किया, इसके लिए आप सबके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मित्रों, एक जमाना था, जब अभिभावकगण हमें हिदायत के तौर पर कहते थे–''पढ़ोगे–लिखोगे बनोगे नबाब, खेलोगो कूदोगे होगे खराब।''

–किन्तु, ये सब बातें आज पुरानी पड़ गई हैं, इनकी प्रासंगिकता समाप्त हो गई है। आज खेलकूद के जरिये दुनियाँ में काफी शोहरत हासिल की जा सकती है और शानो–शौकत से

जिन्दगी बसर की जा सकती है। कुछ खेलों के जरिये तो अब अरबपति भी बना जा सकता है।

मित्रों, आज जब मैं आपको सम्बोधित करने के लिए खड़ा हुआ हूँ, तो मुझे भारतीय युवाओं के हृदय–सम्राट स्वामी विवेकानंद जी की कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं।

विवेकानंद जी ने कहा था– ''ल्वन ूपसस इम दमंतमत जव ीमंअमद जीतवनही विवजइंसस जींद जीतवनही ेजनकल व िजीम ळपजंण'' अर्थात् ''तुम फुटबॉल के जरिये श्रीमद्भागवत् गीता के अध्ययन की तुलना में स्वर्ग के अधिक समीप रहोगे।''

स्वामी जी की इस उक्ति का मतलब यह कदापि नहीं लिया जाना चाहिए कि उन्होंने श्रीमद्भागवत् गीता के अध्ययन का निषेध किया है। स्वामी जी अपने इस वक्तव्य के जरिये शरीर की ताकत और Sportsmanship तथा Sportsman spirit के महत्त्व को समझा रहे थे।

सचमुच, मानव–जीवन में खेलकूद का काफी महत्त्व है। इससे न केवल व्यक्ति की शारीरिक ताकत बढ़ती है, बल्कि इससे हमारी रूहानी ताकत में भी इज़ाफा होता है। स्वस्थ तन में स्वस्थ मन बसता है। श्भ्मंसजील उपदक पद ंीमंसजील ठवकलश्श की पुरानी कहावत से हम सभी अवगत हैं। स्वस्थ मन, मनुष्य में मनुष्यता के विकास में सहायक होता है। इससे समाज में भाईचारा की भावना मजबूत होती है। प्यारे बच्चों, खेल जब खेले जाते हैं, तो किसी एक पक्ष की जीत होती है और किसी एक पक्ष की हार। परन्तु

खेल की जीत और हार को भी दोनों पक्ष Sportsman Spirit में देखते हैं। इसी खेल–भावना को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध अमेरिकन फुटबॉलर विन्स लोम्बार्डी (Vince Lobardi) ने कहा था– "Winning is not everything, but making the effort to win is the real win" यानी, जीत ही सबकुछ नहीं है, बल्कि जीत के लिए किए जा रहे प्रयत्नों में ही वास्तविक जीत की सच्ची भावना निहित रहती है। सच पूछा जाए, तो खेल खेल होते हैं। इनमें न किसी की हार होती है, न किसी की जीत।

प्यारे बच्चों ! आज हम जिस वॉलीबॉल टूर्नामेंट का प्रारम्भ करने जा रहे हैं, इस खेल की शुरूआत सन 1895 ई0 में हुई थी और यह 'यंग मेन्स क्रिश्चियन ऐसोसिएशन' के फिजिकल डाइरेक्टर विलियम जार्ज मॉर्गन के मस्तिष्क की ऊपज थी। उन्होंने बास्केट बॉल, बेसबॉल, टेनिस और हैंडबॉल को मिलाकर इस 'वॉलीबॉल' खेल का आविष्कार किया। वॉलीबॉल का पहला वर्पिबपंस हंउम अमेरिका के ेचतपदहपिमसक बवससमहम में 1896 में खेला गया। अमेरिका, क्यूबा होते बाद में यह बॉलीबॉल ब्राजील और साऊथ अमेरिका में काफी लोकप्रिय हो गया। इस खेल को ओलम्पिक खेलों में शामिल होने के लिए एक लम्बा इन्तजार करना पड़ा और 1964 के ैनउउमत व्सलउचपबश में वॉलीबॉल ओलम्पिक खेलों की सूची में शामिल किया गया।

आज भारत में भी यह खेल काफी लोकप्रिय है। शहरों के साथ–साथ गाँवों में भी यह खेल काफी उत्साहपूर्वक खेला और

देखा जाता है। विश्व के लगभग 211 देशों में आज यह खेल खेला जा रहा है। वॉलीबॉल में अपना देश भारत एशिया में 5वें और विश्व में 27वें स्थान पर है।

क्रिकेट आदि कुछेक खेलों के साथ–साथ वॉलीबॉल, फुटबॉल आदि खेलों पर भी हम ध्यान देकर इस खेल में अपनी मजबूत पकड़ बना सकते हैं। दरअसल, बॉलीबाल एक ऐसा खेल है, जिसे हमारे बच्चों के साथ–साथ बच्चियाँ भी काफी रूचि के साथ खेलती हैं। बालीबॉल खेल के प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्रों में जब हमारी ग्रामीण प्रतिभाओं को भी कुशल प्रशिक्षण मिलने लगेगा, तब हमारे देश में इस खेल की अनगिनत प्रतिभाएँ उभरकर सामने आएँगी। सन 1961 से लेकर 2011 के बीच 24 खिलाड़ियों को 'अर्जुन अवार्ड' मिलना यह बताता है कि इस खेल में भी प्रतिभाओं की कमी नहीं है, जरूरत है इन्हें तलाशने और तराशे जाने की।

मित्रों, आप सभी अब इस खेल का आनन्द लेने के लिए व्यग्र हो रहे होंगे। मैं भी चाहूँगा कि आप सभी इस टूर्नामेंट का आगामी चार दिनों तक भरपूर आनन्द लें। मुझे विश्वास है, इस टूर्नामेंट के माध्यम से भी ऐसी प्रतिभाओं का चयन संभव हो सकेगा, जो कल की हमारी भारतीय 'बॉलीबॉल टीम के चमकते सितारे होंगे। मैं इस टूर्नामेंट को औपचारिक रूप से उद्घाटित करते हुए इसकी समग्र सफलता की कामना करता हूँ। मैं इस टूर्नामेंट के सभी आयोजनकर्त्ताओं, विशेषकर ज्ञान निकेतन विद्यालय–परिवार और सी0बी0एस0ई0 के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित

करता हूँ, जिन्होंने काफी तन्मयता और उत्साह के साथ इसे भव्य रूप में संचालित किया है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।